17 नवम्बर 2012, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर(द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 7 अक्टूबर को 'दशलक्षण में तत्त्वप्रचार' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय की ओर से दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्वप्रचारार्थ देशभर में गये विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये। यह गोष्ठी दो सत्रों में आयोजित की गई।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने एवं द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र. यशपालजी जैन ने की। गोष्ठी में दशलक्षण पर्व के अवसर पर तत्त्वप्रचारार्थ गये विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये।

सभी का अनुभव बहुत अच्छा रहा, अनेक स्थानों पर पाठशाला, स्वाध्याय सभा, दैनिक पूजन इत्यादि अनेक धार्मिक गतिविधियों का संचालन विद्वानों ने प्रारम्भ कराया।

गोष्ठी में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं श्रीमती कमला भारिल्ल आदि सभी अध्यापकगण उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन विवेक जैन भिण्ड, नवीन जैन एवं सनत जैन ने किया।

दिनांक 14 अक्टूबर को 'चरणानुयोग से जैनत्व की सिद्धि' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नीतेशजी शाह जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग में स्वप्निल जैन (कनिष्ठ उपाध्याय) एवं शास्त्री वर्ग में नवीन जैन उज्जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का संचालन विवेक शास्त्री एवं अमितेन्द्र शास्त्री ने किया। अध्यक्ष महोदय को ग्रन्थ भेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 16 से 25 अक्टूबर तक बाल संस्कार शिविर एवं सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 22 अक्टूबर को उदयगिरि पर भगवान शीतलनाथ का निर्वाण कल्याणक मनाया गया। इस शिविर में लगभग 800 लोगों ने धर्म लाभ लिया। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री शैलेन्द्रकुमारजी इंजी. एवं निर्मलकुमारजी नहूसा परिवार थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल के सहयोग से संपन्न हुये।

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर की -

झांकी को प्रथम पुरस्कार

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के दौरान सुगन्ध दशमी के अवसर पर मंदिरों में झांकियाँ लगाई जाती है। इसी क्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर द्वारा भी प्रतिवर्ष टोडरमल स्मारक भवन में सुन्दर एवं शिक्षाप्रद झांकियों का आयोजन किया जाता है, जिसे लगभग 10-15 हजार साधर्मियों द्वारा देखा जाता है। इस वर्ष 'सम्यग्दर्शन के आठ अंग' विषय पर एक सुन्दर सजीव झांकी का आयोजन किया गया। जयपुर में इस वर्ष लगभग 30-35 झांकियाँ लगी, जिनमें से टोडरमल स्मारक भवन की झांकी को **श्री दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा प्रथम स्थान** एवं **राजस्थान जैन युवा महासभा द्वारा द्वितीय पुरस्कार** दिया गया। हार्दिक बधाई !

चलो... शाश्वत तीर्थधाम ! अवश्य पधारें !! चलो... श्री सम्मेदशिखरजी !!!

तीर्थराज सम्मेदशिखर में श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा आयोजित

पार्श्वनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(शनिवार, 24 नवम्बर से गुरुवार, 29 नवम्बर 2012 तक)

में पधारने हेतु आप सभी साधर्मियों को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय – 88

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १५९

प्रस्तुत गाथा १५९ में शुद्ध स्वचारित्र प्रवृत्ति के मार्ग का कथन है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

चरियं चरदि सगं सो जो परदव्वप्पभावरहिदप्पा।
दंसणणाणवियप्पं अवियप्पं चरदि अप्पादो।।१५९।।

(हरिगीत)

पर द्रव्य से जो विरत हो निजभाव में वर्तन करे।
गुणभेद से भी पार जो वह स्व-चरित को आचरे।।१५९।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जो पर द्रव्यात्मक भावों से अर्थात् परद्रव्य रूप भावों से रहित स्वरूप में वर्तता हुआ अपने दर्शन–ज्ञान रूप आत्मा में अभेद रूप आचरण करता है, वह स्व–चारित्र आचरता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र स्वामी टीका में कहते हैं कि जो योगीन्द्र समस्त मोह समूह से बाहर होने के कारण परद्रव्य के स्वभावरूप भावों से रहित स्वरूप में बर्तते हैं तथा स्वद्रव्य के अभिमुख अनुसरण करते हुए निजस्वभाव रूप दर्शन–ज्ञान–भेद को भी आत्मा में अभेदरूप से आचरते हैं, वे ही वास्तव में स्व–चारित्र को आचरते हैं।

इसप्रकार शुद्ध पर्याय परिणत द्रव्य के आश्रित अभिन्न साध्य–साधन भाववाले निश्चयनय के आश्रय से मोक्षमार्ग का निरूपण किया गया है। तथा जो पहले १०७वीं गाथा में दर्शाया गया था, वह स्व–पर हेतुक पर्याय के आश्रित भिन्न साध्य–साधन भाववाले व्यवहारनय के आश्रय से अर्थात् व्यवहारनय की अपेक्षा से प्ररूपित किया गया था। इसमें परस्पर विरोध नहीं है; क्योंकि सुवर्ण और सुवर्ण पाषाण की भाँति निश्चय–व्यवहार को साध्य–साधनपना है। इसीलिए परमेश्वरी तीर्थ प्रवर्तना दोनों नयों के आधीन है।

इसी के भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

स्व–चरित कौं जो आचरै, पर आपा नहिं जास।
दरसन ग्यान–विकल्पगत, अवकल्पी परकास।।२०५।।

(सवैया इकतीसा)

जाकै भेदज्ञान जग्या राग–दोष मोह भग्या,
सगरा सरूप भास्या पर कै भगर का।
विवहार–निहचै का रूप आपरूप जान्या,
जामैं भेद निरभेद दौनौं की करम का।।
विवहार–निहचै का रूप आपरूप जान्या,
साधन अभेद साधि जामैं निरूपाधिरूप।
सोई स्वचरिती सुद्ध पन्थ का पथिक नीका,
तिनही पयान कीना मोख कै नगर का।।२०६।।

(दोहा)

साधन–साधि–विकल्पता, यहु कथनी विवहार।
निहचै एक अभिन्नता निरविकलप अविकार।।२०७।।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि जो पुरुष अपने स्वरूप का आचरण करते हैं वे दर्शन और ज्ञान अथवा निराकार व साकार अवस्था का भेद रहित अभेद रूप आचरण करते हैं। दर्शन का विषय अभेद है, इसलिए निराकार तथा ज्ञान भेद सहित जानता है, इसलिए साकार – इस प्रकार दर्शन–ज्ञान को भेदरहित अभेदपने जानता है। वह भेद विज्ञानी परद्रव्य के अहं भाव से रहित है।

गुरुदेव श्री भावार्थ पर प्रवचन करते हुए कहते हैं कि यह मुनियों के संदर्भ में बात की है। मुनिराजों को वीतरागता का स्वसंवेदन है। राग का वेदन आकुलतामय है। अपने ज्ञान का वेदन ही स्वसंवेदन है, जोकि आकुलता रहित है। वे वीतरागी ज्ञानी समस्त प्रकार के मोह से रहित हैं। मुनिराजों को स्वभाव की अधिकता वर्तती है। शुभाशुभभावों के त्यागी होकर, स्वभाव सन्मुख होकर उसी में अधिकतर वर्तते हैं। चौथे गुणस्थान में भी धर्मी जीवों के दया–दानादि भावों की मुख्यता नहीं होती। स्वद्रव्य की ही मुख्यता वर्तती है।

छठवें गुणस्थान में मुनियों को महाव्रत आदि के विकल्प होते हुए भी उनको उस ओर की मुख्यता नहीं है। देखो! मुनिराजों को ऐसी प्रतीति तो हुई है कि गुण–गुणी अभेद हैं; किन्तु अपनी पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण देव–गुरुओं के प्रति प्रमोद आता है, परन्तु वे जानते हैं कि इस प्रमोद भाव से धर्म नहीं होता। राग होते हुए भी उनमें राग की मुख्यता नहीं होती।

मुनिराजों को जैनधर्म की प्रभावना का विकल्प उठता है। श्रीमद् कुन्दकुन्दाचार्य की शिष्य परम्परा में आचार्य जयसेन स्वामी ने कहा कि ''जैन मन्दिर की प्रतिष्ठा विधि का पाठ बताओ'' देखो! मुनिराजों को भी मन्दिर के निर्वाण एवं आदि का राग आता है, परन्तु उसकी मुख्यता नहीं होती।

प्रश्न :ह्न मुनि सर्व संगत्यागी हैं, तो फिर उन्हें मन्दिर बनवाने में राग कैसे आ सकता है? वे तो राग को अधर्म मानते हैं न?

समाधान :ह्न भाई मुनियों को अभी सम्पूर्ण वीतरागता की प्राप्ति नहीं हुई, राग की भूमिका है। स्वद्रव्य में अभी छठवें गुणस्थान शुभ की भूमिका है, मन्दिर तो निमित्त मात्र है। इसप्रकार स्वद्रव्य व परद्रव्य का कारण पाकर अशुद्ध पर्याय उत्पन्न होती है। ●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

105 पाँचवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अरे, भाई ! दिव्यध्वनि में समागत, पूर्व परम्परा से प्राप्त जिनागम के सभी कथन यदि वे तर्क की कसौटी पर खरे उतरते हैं तो बिना किसी भेदभाव के प्रमाणित ही हैं।

प्रश्न – इसप्रकार तो कोई भी कुछ भी लिख देगा; क्या हम उसे भी प्रमाण मानेंगे ?

उत्तर – नहीं, कदापि नहीं; हाँ, यदि वह हमारी प्राप्त परम्परा के अनुसार सही है, तभी स्वीकार होगा।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का मार्गदर्शन इसप्रकार है –

''प्रथम मूल उपदेशदाता तो तीर्थंकर केवली, सो तो सर्वथा मोह के नाश से सर्वकषायों से रहित ही हैं। फिर ग्रंथकर्ता गणधर तथा आचार्य, वे मोह के मंद उदय से सर्व बाह्याभ्यन्तर परिग्रह को त्यागकर महामंदकषायी हुए हैं; उनके उस मंदकषाय के कारण किंचित् शुभोपयोग ही की प्रवृत्ति पायी जाती है और कुछ प्रयोजन ही नहीं है।

तथा श्रद्धानी गृहस्थ भी कोई ग्रन्थ बनाते हैं वे भी तीव्रकषायी नहीं होते। यदि उनके तीव्र कषाय हो तो सर्व कषायों का जिस-तिस प्रकार से नाश करनेवाला जो जिनधर्म उसमें रुचि कैसे होती?

अथवा जो कोई मोह के उदय से अन्य कार्यों द्वारा कषाय का पोषण करता है तो करो; परन्तु जिन-आज्ञा भंग करके अपनी कषाय का पोषण करे तो जैनीपना नहीं रहता।

इसप्रकार जिनधर्म में ऐसा तीव्रकषायी कोई नहीं होता जो असत्य पदों की रचना करके पर का और अपना पर्याय-पर्याय में बुरा करे।

प्रश्न – यदि कोई जैनाभास तीव्रकषायी होकर असत्यार्थ पदों को जैन शास्त्रों में मिलाये और फिर उसकी परम्परा चलती रहे तो क्या किया जाय ?

उत्तर – जैसे कोई सच्चे मोतियों के गहने में झूठे मोती मिला दे, परन्तु झलक नहीं मिलती; इसलिए परीक्षा करके पारखी ठगाता भी नहीं है, कोई भोला हो वही मोती के नाम से ठगा जाता है; तथा उसकी परम्परा भी नहीं चलती, शीघ्र ही कोई झूठे मोतियों को निषेध करता है। उसीप्रकार कोई सत्यार्थ पदों के समूहरूप जैनशास्त्र में असत्यार्थ पद मिलाये; परन्तु जैनशास्त्रों के पदों में तो कषाय मिटाने का तथा लौकिक कार्य घटाने का प्रयोजन है और उस पापी ने जो असत्यार्थ पद मिलाये हैं, उनमें कषाय का पोषण करने का तथा लौकिक कार्य साधने का प्रयोजन है, इसप्रकार प्रयोजन नहीं मिलता; इसलिए परीक्षा करके ज्ञानी ठगाता भी नहीं, कोई मूर्ख हो वही जैनशास्त्र के नाम से ठगा जाता है, तथा उसकी परम्परा भी नहीं चलती, शीघ्र ही कोई उन असत्यार्थ पदों का निषेध करता है।

दूसरी बात यह है कि ऐसे तीव्र कषायी जैनाभास यहाँ इस निकृष्ट काल में ही होते हैं; उत्कृष्ट क्षेत्र-काल बहुत हैं, उनमें तो ऐसे होते नहीं। इसलिए जैनशास्त्रों में असत्यार्थ पदों की परम्परा नहीं चलती। – ऐसा निश्चय करना।[१]''

इसप्रकार यह समझना ही सही है कि जिनका प्रतिपादन वीतरागता की पोषक जिनवाणी के अनुसार हो; उनके प्रतिपादन में व्यर्थ की शंका-आशंकाएँ खड़ी करना ठीक नहीं है।

एक होता है मार्ग और एक होता है मार्ग का मार्ग। यदि हम किसी से मुम्बई जाने का मार्ग पूछे और वह हमें बताये कि मुम्बई जानेवाले प्लेन में या ट्रेन में बैठ जाइये; आप मुम्बई पहुँच जावेंगे। यह तो हुआ मार्ग।

प्लेन या ट्रेन में बैठ गये – अब हमें क्या करना है ?

कुछ नहीं, अब तो प्लेन चलेगा या ट्रेन चलेगी और हम यथासमय मुम्बई पहुँच जावेंगे; पर हमारी मूल समस्या तो यह है कि प्लेन या ट्रेन में बैठे कैसे ? वे हैं कहाँ ?

इसप्रकार एक है मोक्ष का मार्ग और दूसरा है मोक्ष के मार्ग का मार्ग। यदि हम किसी से मोक्ष में जाने का मार्ग पूछे और वह बताये कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्राप्त कर लीजिये, आप मुक्ति में पहुँच जावेंगे। यह तो हुआ मार्ग।

हमारी मूल समस्या तो यह है कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति कैसे हो ? सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्ष के मार्ग पर कैसे पहुँचे ?

यहाँ जिसकी चर्चा चल रही है; वस्तुत: वह मोक्ष के मार्ग का मार्ग है। इसमें कहा गया है कि **क्षयोपशम और विशुद्धिलब्धि से सम्पन्न व्यक्ति जब किसी ज्ञानी धर्मात्मा से सुनकर, समझकर वस्तुस्वरूप का निर्णय करता है या आगम का अभ्यास करके वस्तुस्वरूप समझने का पुरुषार्थ करता है या दोनों के सहयोग से इस दिशा में सक्रिय होता है; अध्ययन, मनन, चिंतन के आधार पर वस्तुस्वरूप का सही निर्णय कर रहा होता है; तब वह मुक्ति के मार्ग के मार्ग में होता है।**

इसप्रकार मुक्ति के मार्ग के मार्ग में स्थित आत्मार्थी का मार्गदर्शन करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''इसलिए मुख्यता से तो तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाने का पुरुषार्थ करना। तथा उपदेश भी देते हैं, सो यही पुरुषार्थ कराने के अर्थ दिया जाता है तथा इस पुरुषार्थ से मोक्ष के उपाय (मोक्षमार्ग) का पुरुषार्थ अपने आप सिद्ध होगा।[२]''

जिसप्रकार प्लेन या ट्रेन में बैठ जाने के बाद तो मार्ग सुगम ही है; कठिनाई तो प्लेन या ट्रेन में बैठने में है। उसीप्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति के बाद तो मार्ग सुगम ही है; असली कठिनाई तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति करने में ही है। इसमें जिनवाणी (सत्साहित्य) और गुरु की विशेष आवश्यकता है; क्योंकि अभी हमें कुछ पता नहीं है, सबकुछ समझना है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ १२ २. वही, पृष्ठ ३११

17 नवम्बर 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

भीलवाड़ा पंचकल्याणक की तैयारी अन्तिम चरण में

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ नवनिर्मित श्री सीमन्धर जिनालय का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 24 से 30 दिसम्बर तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं तीर्थधाम मंगलायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में संपन्न होने जा रहा है। इस पंचकल्याणक को धर्म प्रभावक एवं भव्यरूप प्रदान करने के उद्देश्य से चल रही तैयारियाँ अब अन्तिम चरण में हैं। इस महामहोत्सव में देश के ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक विद्वानों का भरपूर लाभ प्राप्त होगा। साथ ही मुमुक्षु समाज के अनेक श्रेष्ठीगण भी इस महोत्सव में अपनी उपस्थिति दर्ज करायेंगे। समागत अतिथियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था, कार्यक्रम स्थल के नजदीक की गई है, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप सभी से अनुरोध है कि इस पंचकल्याणक में अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ लेवें। **– पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी, भीलवाड़ा**

आत्मधर्म के हिन्दी अंकों की आवश्यकता

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की उपस्थिति में प्रकाशित हिन्दी आत्मधर्म वर्ष 01 से 35 तक कम्प्यूटराईजेशन द्वारा इन्टरनेट पर उपलब्ध कराये जा रहे हैं, तदर्थ हमें हिन्दी आत्मधर्म वर्ष 2, 3 एवं 4 की फाईल की आवश्यकता है। जिस किसी मुमुक्षु भाई के पास उपलब्ध हो, कृपया निम्न पते पर भेजें। कम्प्यूटराईजेशन कार्य पूर्ण होने पर फाइलें वापस भिजवा दी जायेंगी। **संपर्क सूत्र –** पण्डित देवेन्द्र कुमार जैन, तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ-आगरा मार्ग, सासनी-204216 हाथरस (उ.प्र.) मोबाइल - 0987234019, 09928392619

सर्वोदय अहिंसा अभियान सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से पटाखे न फोडने का संदेश देने के उद्देश्य से चलाया गया सर्वोदय अहिंसा अभियान सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें देशभर में फैली युवा फैडरेशन की सैंकड़ों शाखाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। छिन्दवाडा में केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री श्री कमलनाथ ने पोस्टर का विमोचन किया। सागर में श्री गोपाल भार्गव (मंत्री म.प्र. शासन), कोटा सांसद, टीकमगढ, भिण्ड, ग्वालियर, अलवर आदि क्षेत्रों के विधायक आदि ने भी अभियान की सराहना की। **– संजय शास्त्री**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. जयपुर (राज.) निवासी श्री प्रेमचन्दजी संघी का दिनांक 17 जून 2012 को 92 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपका जीवन आध्यात्मिक रूप से ओतप्रोत था। आप टोडरमल स्मारक भवन की स्वाध्याय सभा के नियमित श्रोता एवं अनन्य सहयोगी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. दूदू (राज.) निवासी श्रीमती नाथीदेवी सोगानी धर्मपत्नी स्व. श्री कल्याणमलजी सोगानी का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में पदमचन्द प्रकाशचन्दजी सोगानी द्वारा 1111/- रुपये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्राप्त हुये।

3. मेघाणी नगर–अहमदाबाद (गुज.) निवासी श्रीमती आशादेवी धर्मपत्नी श्री हितेष कुमार मानावत का दिनांक 5 अगस्त को देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

इंडिया फॉर एनिमल्स 2012 हेतु 'पाल' का मनोनयन

राष्ट्रीय स्तर पर पशुओं के अधिकारों के लिए कार्य कर रही संस्था 'पाल' को वर्ष 2011-2012 में अहिंसा, शाकाहार व पशु अधिकार के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान को देखते हुए देशव्यापी संगठन इंडिया फॉर एनिमल्स 2012 ने अवार्ड के लिए मनोनीत किया है।

नवम्बर में होने वाले इस राष्ट्रीय स्तर की कॉन्फ्रेन्स में देश-विदेश के 300 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। अवार्ड के लिए मनोनीत होने के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

धन्यवाद !

चेन्नई निवासी श्री अरुणजी जैन द्वारा दीपावली के अवसर पर वीतराग-विज्ञान के प्रकाशन हेतु 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद !

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127